2 नवम्बर 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 15 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

17वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा दिनांक 18 से 27 अक्टूबर 2015 तक 17वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री अशोकजी बड़जात्या, इन्दौर (अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति) के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, जयपुर ने की। मुख्य-अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह, मुम्बई एवं विशिष्ट-अतिथि के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों के साथ-साथ श्री आई.एस. जैन मुम्बई, श्री सूरजमलजी जैन रामगंजमंडी, श्री जैनबहादुरजी जैन कानपुर, श्री केशवदेवजी जैन कानपुर, श्री भरतजी भौरे, कारंजा, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री शांतिलालजी गंगवाल सी.ए. जयपुर, श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर, श्री अजीतकुमारजी तोतुका जयपुर, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, श्री भूपेषजी सोगानी अमेरिका, श्री मनोजजी बंगेला सागर, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन के उपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने टोडरमल स्मारक की रीति-नीतियों से अवगत कराते हुये संक्षेप में मार्मिक उद्बोधन दिया एवं प्रवचनसार पर प्रवचन का लाभ प्रदान किया।

संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने तथा मंगलाचरण सौरभजी शास्त्री ने किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन, जयपुर के करकमलों से हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में टोडरमल स्मारक से होनेवाले तत्त्वप्रचार की बहुत सराहना की। सभा मण्डप का उद्घाटन श्री शांतिलालजी विपिनजी गंगवाल परिवार ने तथा सभा मंच का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर ने किया।

प्रवचन - शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के छहढाला पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा निमित्त-उपादान पर प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, ब्र.हेमचंदजी 'हेम', डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें - षट्कारक पर पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा, **गुणस्थान विवेचन** पर ब्र. यशपालजी जैन व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा, **आत्मा की शक्तियाँ** पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा, **नयचक्र व तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1** पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा 98-108)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कक्षायें ली गईं। इसके अतिरिक्त तीन दिनों तक डॉ. राकेशजी नागपुर द्वारा **रत्नकरण्ड श्रावकाचार के सल्लेखना अधिकार** पर विशेष कक्षा ली गई।

प्रात: 5.45 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के समयसार पर व्याख्यान के तत्काल बाद 7.00 बजे तक जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर प्रोजेक्टर द्वारा किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल बालकक्षायें डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा चलाई गई।

शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय –

संजू के पिता का अन्तर्द्वन्द्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सेठ सिद्धोमल अपने इकलौते पुत्र संजू के दुर्व्यसन में पड़ जाने से बहुत दु:खी थे। उन्हें क्या पता था कि उनकी आँखों का तारा एक दिन उन्हीं की आँखों की किरकिरी बन जायेगा।

उन्होंने उसे सुयोग्य बनाने के लिये क्या-क्या नहीं किया था? और जो कुछ किया सो तो किया ही, एक योग्य पिता के सभी कर्तव्यों और दायित्वों का निर्वाह वे अच्छी तरह कर सकें, एतदर्थ उन्होंने एक शोधछात्र की भाँति तत्संबंधी साहित्य भी खूब पढा था और जहाँ/जिस साधन से जो जानकारी उपलब्ध होने की संभावना दिखी, उसे प्राप्त करने के लिये वे सतत् प्रयत्नशील रहे।

अपनी समझ से तो उन्होंने उसके लालन-पालन, भरण-पोषण और शिक्षा-संस्कार आदि में कहीं कोई कमी नहीं रखी थी, फिर भी यह सब कैसे हो गया ? भूल कहाँ हुई ? कैसे हुई ? उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

'कभी-कभी अति सावधानी और अधिक चतुराई भी कष्ट कारण बन जाती है'- इस तथ्य से अनभिज्ञ सेठ सिद्धोमल ने अपनी प्राप्त जानकारी के आधार पर संतान को सुयोग्य बनाने के कुछ मन-गढन्त सिद्धान्त (फार्मूले) बना लिये थे, जो उनके लिये दु:खद सिद्ध हुये।

उनका मानना था कि -''संतान को कभी मुँहबोला नहीं बनाना चाहिये, अपने मुँह नहीं लगाना चाहिये, उसे अपने सिर नहीं चढाना चाहिये। अपने हृदय में उसके प्रति कितना भी प्यार क्यों न हो; पर उस प्यार का प्रदर्शन उसके सामने कभी नहीं करना चाहिये। लाड़-प्यार केवल खिलाने-पिलाने तक ही सीमित रखना चाहिये। पढाने-लिखाने और काम-काज सिखाने में काहे का लाड़-प्यार ? वह संतान ही किस काम की, जो आँखों में न डरे ? बच्चों की तो बड़ों से आँख में आँख मिलते ही आँख नीची हो जानी चाहिये। उसे सब बातें आँख के इशारे में ही समझना चाहिये। पिता के पैरों की आहट आते ही घर में सन्नाटा न छाया तो वह काहे का अनुशासन ?''

हृदय तो आखिर हृदय ही है। चाहे पिता का हो या माँ का। वह पुत्र से प्यार किये बिना कैसे रह सकता है ? सेठ सिद्धोमल का हृदय भी संजू से प्यार करने के लिये मचल रहा था फिर भी वे हृदय पर पत्थर रखकर अपने बेटे के हित के लिये इन सभी सिद्धान्तों का कठोरता से पालन कर रहे थे। यद्यपि इन सिद्धान्तों पर चलना उनके लिये तलवार की धार पर चलने के समान कठिन था; इसके लिये उन्हें अपने अन्दर बैठै पिता के हृदय को कुचलना पड़ा था। उनका मन बार-बार अपने प्रिय पुत्र संजू पर ढेरों प्यार उड़ेल देने का होता था, हँसने-हँसाने का होता था, उसके साथ खेलने और उसे खिलाने का होता था, उसे चटकार ले-लेकर किस्से-कहानियाँ सुनाने का होता था, अपनी ही थाली में एक साथ खाना खिलाने का होता था; पर वे अपने ही बनाये सिद्धान्तों का गला अपने हाथों से कैसे घोंट दें ? अत: मन मारकर पीछे हट जाते थे और मुख पर गंभीर भाव ले आते थे।

अनेक बार तो ऐसा भी हुआ कि जब संजू सो रहा होता तो चुपचाप दबे पाँवों से उसके कमरे में जाते और प्यार भरा चुम्बन लेने के लिये अपना मुँह बेटे के मुँह के पास ले जाते, फिर जाग जाने की आशंका से तुरन्त पीछे हट जाते। सोते में प्यार से उसके माथे पर हाथ फेरते, घंटों खड़े-खड़े उसके मुखमंडल को निहारते रहते और मन ही मन प्रसन्न होते रहते। पर उसके समक्ष उनका रुख वैसा ही कड़ा रहता।

उस बेचारे को क्या पता कि उसके पापा का उस पर कितना प्यार है ? उसने तो सदा उनका विकराल रुख ही देखा था, अत: वह तो सिंह के सामने बकरे की तरह भयभीत एवं भयाक्रान्त ही रहा करता था।

यद्यपि घर में वह भीगी बिल्ली की तरह रहता था, पर अपने साथियों में पहुँचते ही वह शेर बन जाता था। आखिर मनोगत भावनाएँ कहीं न कहीं और कभी न कभी तो प्रगट होगी ही, कब तक दबाकर रह सकता था वह उन्हें ?

वे अपने आस-पड़ौस में बड़े गर्व से कहा करते थे - ''हमारा संजू तो कभी हमारे सामने आँख उठाकर भी नहीं देख सकता, मुँह लगने की तो बात ही क्या? कभी पूरा मुँह खोलकर बात भी नहीं कर सकता। संतान हो तो ऐसी हो।

यद्यपि घर में किसी बात की कमी नहीं, पर हम तो संजू को जेबखर्च हिसाब-किताब से ही देते हैं। मुँहमाँगा मनमाना रुपया-पैसा मिलने से लड़के बिगड़ जाते हैं। वह भी कभी सामने आकर रुपये-पैसे मांगने की या अन्य कोई जिद करने की हिम्मत नहीं करता। जो दिया, सो चुपचाप ले लेता है। इस कलयुग में संजू जैसा लड़का चिराग लेकर ढूँढने से भी नहीं मिलेगा।'' (क्रमश:)

दृष्टि का विषय

18 पाँचवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा को सामान्य, अनादि-अनंत त्रिकालीध्रुव नित्य, असंख्यातप्रदेशी-अभेद एवं अनन्तगुणात्मक-अखण्ड एक कहा गया है। इसमें जिसप्रकार सामान्य कहकर द्रव्य को अखण्ड रखा गया है, असंख्यप्रदेशी-अभेद कहकर क्षेत्र को अखण्ड रखा गया है, अनन्तगुणात्मक-अखण्ड कहकर भाव को अखण्ड कहा रखा गया है; उसीप्रकार अनादि-अनन्त त्रिकालीध्रुव नित्य कहकर काल को भी अखण्डित रखा गया है। अन्त में एक कहकर सभी प्रकार की अनेकता का निषेध कर दिया गया है।

इसप्रकार दृष्टि के विषयभूत त्रिकालीध्रुव द्रव्य में पर्यायों के अनुस्यूति से रचित प्रवाहरूप स्वकाल का निषेध नहीं किया गया है, अपितु विशिष्ट पर्यायों का ही निषेध किया गया है।

यहाँ एक बात विशेषरूप से ध्यान देने योग्य है कि भूतकाल की पर्यायें तो विनष्ट ही हो चुकी हैं, भविष्य की पर्यायें अभी अनुत्पन्न हैं और वर्तमान पर्याय स्वयं दृष्टि है, जो विषयी है; वह दृष्टि के विषय में कैसे शामिल हो सकती है ? विषय बनाने के रूप में तो वह शामिल हो ही रही है; क्योंकि वर्तमान पर्याय जबतक द्रव्य की ओर न ढले, उसके सन्मुख न हो, उसे स्पर्श न करे, उससे तन्मय न हो, उसमें एकाकार न हो जाये; तबतक आत्मानुभूति की प्रक्रिया भी सम्पन्न नहीं हो सकती। इसप्रकार वर्तमान पर्याय अनुभूति के काल में द्रव्य के सन्मुख होकर तो द्रव्य से अभेद होती ही है, पर यह अभेद अन्य प्रकार का है, गुणों और प्रदेशों के अभेद के समान नहीं।

इसप्रकार दृष्टि का विषयभूत द्रव्य काल से खण्डित भी नहीं होता और उत्पन्नध्वंसी विशेष पर्याय दृष्टि के विषय में शामिल भी नहीं होती।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन अब टाटा स्काई पर भी

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 7 से 7.30 बजे तक जिनवाणी चैनल पर प्रसारित किये जाते हैं। अब यह चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.193, एयरटेल के 684 एवं वीडियोकॉन के 489 पर उपलब्ध है। सभी साधर्मीजन प्रवचनों का अवश्य लाभ लें।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 1 नवम्बर से 'समाधिमरण' विषय पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन प्रारम्भ हो रहे हैं।

'सल्लेखना' पर संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर शुक्रवार, दिनांक 23 अक्टूबर को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् के तत्त्वावधान में 'सल्लेखना' विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई।

संगोष्ठी का प्रारम्भ पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्नातक परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेशचंदजी शिवपुरी उपस्थित थे।

इस गोष्ठी में पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद ने **'सल्लेखना का स्वरूप व आवश्यकता'** पर, पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा ने **'सल्लेखना की विधि व अतिचार'** पर, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने **'सल्लेखना संबंधी भ्रान्तियाँ व निराकरण'** पर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने **'सल्लेखना व अकालमृत्यु'** पर, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य ने **'सल्लेखना संबंधी चिकित्सकीय पक्ष'** पर एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री ने **'समाधि व सल्लेखना'** पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई आदि विद्वत्गण भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

विद्वत्परिषद् की गोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर शनिवार, दिनांक 24 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में **'समाधि एवं सल्लेखना'** विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई।

संगोष्ठी का प्रारम्भ पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

इस गोष्ठी में डॉ. प्रेमचंद रांवका व डॉ. वीरसागरजी शास्त्री ने **'भारतीय दर्शनों में सल्लेखना'** पर वक्तव्य दिया, इसके अतिरिक्त डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, ब्र. हेमचंदजी 'हेम', श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया ने भी अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का संचालन विद्वत्परिषद् के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

6 वाँ
सर्वोदय अहिंसा अभियान

सर्वोदय अहिंसा अभियान

पटाखों से

लाभ 0%

हानि 100%

किसी धार्मिक किताब में नहीं लिखा है कि दिवाली पर पटाखे जलाने चाहिए, ये प्रकाश का त्यौहार है, शोर का नहीं: जस्टिस

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के जस्टिस यूडी साल्वे ने एक याचिका पर सुनवाई करते हुए ये टिप्पणी की थी। याचिका दिवाली पर जलाए जाने वाले पटाखों और इससे होने वाले वायु प्रदूषण से संबंधित थी। इस पर केंद्र से 12 अक्टूबर तक जवाब मांगा गया है।

साभार - दैनिक भास्कर 6 अक्टूबर 2015

अरबों रुपयों की व्यर्थ में बर्बादी

पटाखों के रूप में हम एक दिन में अरबों रुपयों में आग लगा देते हैं, जिससे नुकसान ही नुकसान है, फायदा कुछ नहीं। जितने रुपयों के पटाखे हम एक दिन में फूँक देते हैं, उतने रुपयों से हजारों परिवारों का पेट पाला जा सकता है।

आग लगने से संपत्ति का नुकसान

पटाखों से कई स्थानों पर भीषण आग लग जाती है, जिससे करोड़ों-अरबों रुपयों की सम्पत्ति उसमें जलकर नष्ट हो जाती है और अनेक परिवारों का जीवन अंधकारमय हो जाता है। ये हादसे न सिर्फ दीपावली पर होते हैं, अपितु जब भी पटाखों का प्रयोग होता है, तब ऐसे हादसे पूरे साल भर होते रहते हैं।

गर्भस्थ शिशु एवं बच्चों को नुकसान

पटाखों की तेज विस्फोटक आवाज से, तेज रोशनी से, बारूद के धुँए से जब हम बड़ों को परेशानी होती है तो गर्भस्थ शिशुओं एवं नवजात बच्चों का क्या होता होगा? उन्हें अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं तथा गर्भस्थ शिशु के जन्मजात बहरे होने का खतरा बढ़ जाता है। इस पाप के भागीदार हम पटाखे फोड़कर बनते हैं।

वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण

पटाखों की तेज आवाज से ध्वनि प्रदूषण, पटाखों के धुँए एवं उसकी गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अवशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है, जो कि हम सभी के जीवन के लिए प्राणघातक है। पूरे वर्ष पर्यावरण की सँभाल करना तथा एक दिन उसे यूँ बर्बाद करना क्या समझदार लोगों का काम है?

अरबों-अनन्तों जीव-जन्तुओं-प्राणियों की हत्या

हमें आग की आँच/तपन से डर लगता है तो पटाखों की भयंकर आग से छोटे-छोटे प्राणियों का जल मरना तो निश्चित है। विज्ञान कहता है कि पटाखों की आवाज से अनेक पशुओं के गर्भ गिर जाते हैं, उसकी विषैली वायु उन्हें अंधा-बहरा बना देती है। महापर्व पर महापाप का यह तांडव कितना उचित है?

आँखों एवं कानों पर बुरा प्रभाव

पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के पर्दे फट जाते हैं। श्वास के रोगियों के लिए यह महापर्व आराधना का नहीं अपितु महा यातना का पर्व बन जाता है, उन्हें अनचाही कैद का सामना करना पड़ता है। इस कुकृत्य के जिम्मेदार क्या पटाखा फोड़ने वाले नहीं हैं?

ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा

पटाखों के जलने से निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड एवं हानिकारक गैसों से वायुमंडल दूषित होता है, जिससे ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा निरंतर बढ़ रहा है।

ईश्वर की वाणी का अपमान

किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखे फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा अनेक जीव-जन्तुओं को जिन्दा जलाकर ईश्वर की वाणी का अपमान/अनादर कर रहे हैं।

शारीरिक क्षति एवं जनहानि

बम विस्फोट करने वालों को हम आतंकवादी कहते हैं तो विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग अंधे/बहरे/घायल हो जाते हैं तथा हजारों की मृत्यु हो जाती है। आपके पटाखा प्रेम के दुष्परिणाम देखने के लिए दीपावली के अगले दिन अपने नगर के अस्पताल में जरूर जायें और फिर स्वयं विचार करें कि हम कौन हैं?

पटाखा फैक्ट्री में आग, 54 मरे

फैक्ट्री का मलबा अभी भी सुलग रहा है। भारी गर्मी से कुछ बिना फटे पटाखों में विस्फोट होने की आशंका जताई है। पुलिस ने पांच एकड़ में फैले फैक्ट्री के आसपास के क्षेत्र को घेर लिया है। दमकलकर्मी आग बुझाने में लगे हैं। इसके बाद मलबे को हटाने का काम शुरू किया जा सकेगा।

शिवकाशी में भीषण दुर्घटना, 70 से ज्यादा घायल

तमिलनाडु में शिवकाशी जिले के मुदलीपट्टी गांव के पास पटाखा कारखाने में एकाएक हुआ धमाका
घटना के वक्त 300 लोग थे परिसर के अंदर, परिसर के सभी 48 शेड जलकर खाक हो गए।
पटाखों का सबसे ज्यादा कारोबार यहीं। 80 फीसदी पटाखों का उत्पादन। 1000 करोड़ रुपये करीब का वार्षिक पटाखा कारोबार

सोचिये! समझिये!! और निर्णय कीजिये!!!

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

यदि आप प्रकृति प्रेमी / पर्यावरण प्रेमी हैं तो पटाखे न चलायें क्योंकि पटाखों से प्रकृति / पर्यावरण को नुकसान होता है।

यदि आप नेत्रदान / रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखे न चलायें, क्योंकि पटाखों से आँखों की रोशनी चली जाती है।

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

संयोजक
संजय शास्त्री
+ 91 95092 32733

निवेदन - इस पत्रिका को विद्यालय, मंदिर, अस्पताल आदि सार्वजनिक स्थल पर लगवायें, जहाँ अधिक से अधिक लोग इस पढ़ सकें। अभियान का हिस्सा बनने हेतु सम्पर्क करें। 9785 999100

कार्यालय - B-180, A-2, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर-15 मोबाइल : 09785 999100
Email.sarvodayaahimsa@gmail.com •Facabook. www.facebook.com/sarvodayahimsa

कार्तिक माह की अष्टाह्निका महापर्व के पावन अवसर पर
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

सिद्धचक्र महामण्डल विधान

(बुधवार, दिनांक 18 नवम्बर से बुधवार, दिनांक 25 नवम्बर 2015 तक)

ज्ञान–भक्ति–अध्यात्म की त्रिवेणी के सुन्दर संगम रूप
इस महामंगलमय अवसर पर धर्मलाभ लेने हेतु
आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित

सादर आमंत्रित हैं।

विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता

1. श्री सुरेशचंद अजीतकुमार वैभवकुमार तोतूका परिवार, जयपुर
2. श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल जनता कॉलोनी, जयपुर

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

1. श्रीमती कांता–सतीश सेठी महावीर नगर, जयपुर
2. वी.वि. महिला मंडल, टोडरमल स्मारक, जयपुर
3. श्रीमती विमलादेवी ताराचंदजी सौगानी, जयपुर
4. श्रीमती श्रीकांताबाई पूनमचंदजी छाबड़ा
5. श्रीमती सुशीलादेवी शांतिलालजी जैन जयपुर

विद्वत्समागम :- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल,
पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा

विधानाचार्य :- ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना

नोट :– बाहर से पधारने वाले महानुभाव अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें, ताकि आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके। सभी अतिथियों हेतु नि:शुल्क आवास एवं सशुल्क भोजन की व्यवस्था उपलब्ध है।

कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र :- ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15
फोन : 0141–2705581, 2707458, 9785643202 ई–मेल : ptstjaipur@yahoo.com

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का –

राजस्थान प्रदेश युवा सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 अक्टूबर को अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का राज.प्रदेश अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने की। डॉ. शास्त्री ने 26 से 30 दिसम्बर 2015 तक होने वाली राजस्थान के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा की घोषणा 'पण्डित टोडरमल यात्रा संघ' के रूप में की। जिसमें राजस्थान युवा व महिला फैडरेशन के कार्यकर्ता व पदाधिकारी भाग लेंगे। यात्रा में विभिन्न विद्वानों के प्रवचन, गोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पूजन, भक्ति का लाभ मिलेगा।

मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती सुमन शर्मा (अध्यक्ष–राजस्थान राज्य महिला आयोग, राज्यमंत्री दर्जा) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री चम्पालालजी भण्डारी बैंगलोर व श्री निशिकान्तजी औरंगाबाद मंचासीन थे।

मुख्य वक्ताओं में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संबोधित किया। डॉ. भारिल्ल ने कहा कि युवाओं का जोश और बुजुर्गों का होंश दोनों मिलकर ही देश व समाज का उत्थान कर सकते हैं। युवाओं को आग लगाने का नहीं आग बुझाने का काम करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय महामंत्री), पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय मंत्री), श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), पण्डित पीयूषजी शास्त्री (राष्ट्रीय संगठन मंत्री), डॉ. महेशजी भोपाल, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर आदि विद्वत्गण भी उपस्थित थे।

संचालन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने एवं मंगलाचरण श्री दिव्यांश जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने किया।

पूजन विधि विधान प्रशिक्षण शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मन्दिर में दिनांक 3 से 8 अक्टूबर तक पूजन विधि विधान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन्' का सानिध्य प्राप्त हुआ तथा प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशजी बांझल इन्दौर व ब्र.महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में मुख्यत: मंगलाचरण, प्रक्षाल अभिषेक विधि, पूजा का स्वरूप, अष्टद्रव्य चढाने का प्रयोजन, विधि–विधान का सामान्य रूप इत्यादि विषयों पर कक्षायें आयोजित हुई।

शिविर में कक्षाओं के अन्तर्गत प्रात: पूजन का स्वरूप पर, दोपहर में विधि–विधान का स्वरूप पर कक्षायें एवं रात्रि में शंका–समाधान हुये। इस शिविर में युवा, महिला, प्रौढ सभी लोगों ने भरपूर लाभ लिया।

शिविर का संचालन पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड ने किया।

डॉ. भारिल्ल विद्वत्परिषद् के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 24 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के 23वें राष्ट्रीय अधिवेशन के पूर्व तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को तीसरी बार निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया; इस आशय की घोषणा चुनाव अधिकारी ब्र. यशपालजी जैन द्वारा की गई।

घोषणा के उपरान्त उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से घोषणा का स्वागत किया तथा डॉ. भारिल्ल को मालाओं से लाद दिया।

कार्यकारिणी की मीटिंग में डॉ. भारिल्ल ने अपनी 21 सदस्यीय कार्यकारिणी में डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई को **कार्याध्यक्ष**, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली को **उपाध्यक्ष**, श्री अखिलजी बंसल जयपुर को **महामंत्री**, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर को **मंत्री**, डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली को **कोषाध्यक्ष**, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर को **प्रकाशन मंत्री**, डॉ. राजीवजी प्रचंडिया अलीगढ को **प्रचार मंत्री** बनाया गया है। शेष सदस्यों में डॉ. प्रेमचंदजी रांवका जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन बेलगांव, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. बी.एल. सेठी जयपुर, श्री रवीन्द्रजी मालव ग्वालियर, डॉ. ऋषभचंद फौजदार वैशाली, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई हैं। शेष पदों की पूर्ति बाद में की जायेगी। **– अखिल बंसल, महामंत्री**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

कोलकाता थे एवं शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री नरेन्द्रकुमार रहतूमलजी जैन बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली, श्री अजितप्रसाद वैभवकुमारजी जैन परिवार दिल्ली एवं श्री प्रेमचंदजी बजाज तन्मय–ध्याता बजाज कोटा थे।

इस शिविर में नवलब्धि विधान का आयोजन पण्डित गोमटेशजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री महावीर देवीलालजी जैन मुम्बई, श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री सनतकुमारजी जैन भोपाल एवं श्रीमती कविता प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत थे।

शिविर के समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने कहा कि शिविर में 36 विद्वानों के माध्यम से लगभग 650 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। हजारों घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर–घर पहुंचा। ●

पुण्य स्मृति !

जयपुर (राज.) स्थित महावीर नगर निवासी स्व.श्री प्रकाशचंदजी गंगवाल पुत्र स्व. डॉ. गुलाबचंदजी गंगवाल की स्मृति में श्रीमती विमलादेवी द्वारा वीतराग–विज्ञान हेतु 2100/– रुपये प्राप्त हुये।

2 नवम्बर 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

मासिक गोष्ठी का शुभारम्भ

भिण्ड (म.प्र.) : (1) यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मन्दिर में दिनांक 6 सितम्बर को मासिक गोष्ठी की शृंखला में प्रथम गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय 'जैनधर्म के परिप्रेक्ष्य में रक्षाबंधन महापर्व' था।

इस अवसर पर स्थानीय विद्वानों के रूप में पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री एवं पण्डित सुमितजी शास्त्री ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन' भी उपस्थित थे।

गोष्ठी का संचालन पण्डित विवेकजी शास्त्री द्वारा किया गया।

(2) दिनांक 4 अक्टूबर को मासिक गोष्ठी की शृंखला में द्वितीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय 'पाठशाला और संस्कार' था।

इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं द्वारा पाठशाला व संस्कार की महत्ता पर विचार व्यक्त किये गये। कार्यक्रम में ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन' एवं प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशजी बांझल इन्दौर भी उपस्थित थे।

गोष्ठी का संचालन व संयोजन पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सभापति पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री थे।

ज्ञातव्य है कि यह गोष्ठी प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को आयोजित होती है एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री व पण्डित सुमितजी शास्त्री पाठशाला की जागृति व रोचकता के लिये प्रयासरत हैं। **- विवेक शास्त्री, भिण्ड**

तीन विद्वान विद्वत्परिषद् पुरस्कार से सम्मानित

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 24 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा जैनागम के मनीषी विद्वानों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया। इसके अन्तर्गत डॉ. प्रेमचंदजी रांवका जयपुर को गोपालदास बरैया पुरस्कार, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली को गणेशप्रसाद वर्णी पुरस्कार तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर पण्डित प्रवर टोडरमल विद्वत् परिषद् पुरस्कार से सम्मानित करते हुये 'युवा विद्वत्रत्न' के मानद विरुद से विभूषित किया गया। ज्ञातव्य है कि ये पुरस्कार इनके द्वारा किये जा रहे आगम, अध्यात्म, प्रवचन व लेखन के क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका के लिये समर्पित किया गया। तीनों विद्वानों का संक्षिप्त परिचय डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल ने प्रस्तुत किया। शॉल एवं माल्यार्पण श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई एवं श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने, प्रशस्ति-वाचन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने, तिलक व श्रीफल भेंट अन्य विद्वानों ने किया। पुरस्कार स्वरूप राशि डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने भेंट की।

संचालन विद्वत्परिषद् के महामंत्री श्री अखिलजी बंसल ने किया।

अध्यापकों का प्रशिक्षण संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 21 से 25 अक्टूबर तक श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की प्रशिक्षण कक्षाओं के अध्यापकों का रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किया गया।

दिनांक 21 अक्टूबर को कार्यक्रम का उद्घाटन तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य अतिथि श्री अभयकरणजी सेठिया सरदारशहर एवं विशिष्ट अतिथि श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा थे। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. किरण शहा पुणे ने किया।

इस अवसर पर विद्वत्वर्ग के अन्तर्गत पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा तथा ट्रस्ट के पदाधिकारियों के अन्तर्गत श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम की रूपरेखा श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने प्रस्तुत की।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अध्यक्षीय उद्बोधन के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर आदि महानुभावों के उद्बोधन का लाभ मिला।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने एवं संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

शोक समाचार

सेलू (महा.) निवासी श्री मानिकचंदजी विनायके का दिनांक 14 अक्टूबर को 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' - ऐसी भावना भाते हुये देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। आप नवागढ अतिशय क्षेत्र, दिगम्बर जैन समाज सेलू के सदस्य थे तथा ऐलोरा गुरुकुल आदि संस्थाओं के ट्रस्टी थे।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127